* प्राक्कथन *

विश्व साहित्य में उपन्यास विधा बहुत लोकप्रिय हो रही है। स्वातंत्र्योत्तर युग के उपन्यास साहित्य ने भारतीय जनमानस में सर्व व्याप्त राजनीति को राजनीतिक उपन्यासों में वाणी देने का प्रयत्न किया। स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में राजनीति के विविध पहलुओंको विस्तार देने के लिए अनेक राजनीतिक उपन्यास लिखे गये। इन उपन्यासकारों में 'देवेंद्र सत्यार्थी'; 'वृंदावनलाल वर्मा';'चतुरसेन शास्त्री'; 'फणीश्वरनाथ'रेणु';'विष्णू प्रभाकर';'अनंतगोपाल शेवडे'; 'भगवतीचरण वर्मा'; 'लक्ष्मिणारायन लाल'; 'मन्मथनाथ गुप्त'; 'श्री यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र'; 'श्रीलाल शुक्ल'; 'श्री राजकृष्ण मिश्र'; 'धीरेंद्र अस्थाना'; 'श्री हिमांशु जोशी'; और मन्नू भंडारी आदि महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन राजनीतिक उपन्यासों की विशेषता यह है कि इन उपन्यासों में राजनीति के विविध आयामों को यथार्थता के साथ प्रस्तुत किया है। आज की राजनीति को विविध विचारधाएँ प्रभावित कर रही हैं। समाजवादी; मार्क्सवादी; राष्ट्रवादी; गांधीवादी; जनवादी विचारधाराओं ने राजनीति को प्रभावित किया है। अलग-अलग विचारधाराओं पर आधारित अलग-अलग राजनीतिक दल खडे हो रहे हैं। इससे राजनीतिक माहौल में वैचारिक विभिन्नताओं का प्राबल्य बढता जा रहा है; और संघर्ष की स्थितियों का भी निर्माण होता जा रहा है।

सन् १९६० के पश्चात् राजनीतिक माहौलों में बढती अराजकता; जाति केंद्रित और धर्म केंद्रित राजनीति प्रभावित बनती जा रही है। विविध पत्र-पत्रिकाओं को अपने पक्ष में लेकर राजनीति गैर कानूनी ढंग अपना रही है। जॉच कमिशनों की नियुक्ति करके राजनीति में समय निकालने का प्रयत्न

किया जा रहा है। समाज के पिछडे वर्ग के प्रति सहानुभूति दिखाकर राजनीतिक मुनाफा पक्का किया जा रहा है। चुनाव के दिनों विविध आमिषों को दिखाकर जनता को धोखा दिया जा रहा है। राजनीतिकी ओट में भ्रष्टाचार बढता जा रहा है और न्यायदान की अवहेलना होती जा रही है। राजनीति के इन सभी तथ्यों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने का काम स्वातंत्र्योत्तर उपन्यासों में होता जा रहा है। इसी पृष्ठभूमिपर मन्नू भंडारी के "महाभोज" का अपना अनन्य साधारण महत्व लक्षित हो रहा है। आज राजनीति में फैले अवैध कारनामों को "महाभोज" में स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। दलित हत्याकांड की पृष्ठभूमिपर लिखे गये इस उपन्यास में आज की राजनीति; आज के राजनीतिक नेता; आज की चुनाव सभाएँ; आजके चुनावी हथकण्डें; आजके नेताओं की 'बगुला-भगत' की प्रवृत्ति; चुनाव के दिनों दलितों के प्रति दिखाये जानेवाली संवेदना; विरोध करनेवाले पक्षांतर्गत शक्ति को हटाने के लिए अपनाये गये हथकण्डें आदि सभी की आलोचना मन्नूजी ने कर के आज की राजनीति पर कटु व्यंग किया है।

भारतीय प्रजातंत्र में राजनीति का अनन्य साधारण महत्व है। सत्तारुढ पक्ष की दृढ मानसिकता पर भारतीय जनतंत्र की बाग-डौर खडी रहने वाली है; इस हालत में राजनीतिक बिगडाव की स्थितियों नें भारतीय जनमानस को घुन की भॉति कुत्तर-कुत्तर कर खाने का प्रयत्न शुरु कर दिया है। इस बात पर मन्नूजी ने यहॉ दु:ख प्रकट किया है। इस पर भी यहॉ प्रकाश डाला है। मन्नूजी राजनीति और समाजनीति में अधिक फर्क करना नही चाहती है। मन्नूजी के मतानुसार राजनीति और समाजनीति एक ही नाणे की दो बाजू है। स्वस्थ समाज की कल्पना के लिए स्वस्थ राजनीति की आवश्यकता मन्नूजी ने यहॉ विशद की है।

आज की राजनीति के, राजनीतिक नेताओं के विविध दोषों को मन्नूजी ने यहाँ स्पष्ट किया है। प्रस्तुत उपन्यास में मन्नूजी ने दलितों की स्थितिगति; दलित मजदूरों की दयनियता; दलित युवकों की दिशा विहिनता; दलित युवकों पर सवर्णों के दबाव; दलित मजदूरों का शोषण; अन्याय और अत्याचार के प्रति दलितों में उत्पन्न चेतना; इस चेतना को दबाने वाली बाह्यशक्तियाँ; दलित नारी में अस्मिता जागृति; दलितों के प्रति दिखाये जानेवाली बेरहमी आदि का विस्तार से चित्रण कर के आज की राजनीति में दलितों की स्थिति को तलाशने का प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत उपन्यास "महाभोज" में राजनीति और दलित समाज स्थिति इतनी घुलमिल गई है कि उपर से यह उपन्यास दलित समस्यासे युक्त लगता है; परंतु इस दलित समस्या पर राजनीतिने इतना प्रभाव डाला है कि दलित समस्यापर आधारित यह एक कोरा राजनीतिक उपन्यास बन बैठा है।

प्रेरणा

मन्नू भंडारी का "महाभोज" मैंने पढा और इस में निहित राजनीति के विविध आयामों पर चिंतन किया। इस राजनीति के विविध आयामों ने मुझे इतना प्रभावित किया कि मुझे ऐसा लगा कि महाभोज पर हम लघु-शोध-प्रबंध भी लिख सकते हैं। मैंने एम्.फिल्.में प्रवेश लेनेपर महाभोज में चित्रित राजनीति और "हिंदी के राजनीतिक उपन्यास परंपरा में महाभोज।" इस विषय को ही चुनने का दृढ संकल्प किया। इस लघु-शोध-प्रबंध की परिपूर्ति होने के बाद मेरा यह संकल्प सही अर्थों में साकार हुआ।

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे सामने अनेक प्रश्न उपस्थित हुए। ये प्रश्न निम्नलिखित है।

१) राजनीति और साहित्य का संबंध क्या होता है ?

२) आज की राजनीतिका प्रतिबिंब मन्नूजी के महाभोज में कहाँ तक प्रतिबिंबित हो गया होगा ?

३) क्या महाभोज कोरा राजनीतिक उपन्यास हो सकता है ?

४) महाभोज में चित्रित राजनीति का स्वरुप कैसे होगा ?

५) राजनीति के विविध आयामों ने महाभोज की कथावस्तु में कैसा योगदान निभाया होगा ?

६) हिंदी उपन्यास साहित्य में राजनीतिक उपन्यासों का स्थान क्या होगा ?

७) एक नारी के नाते मन्नूजी को राजनीतिपर आलोचना करना कहाँ तक संभव होगा ?

आदि कई प्रश्न इस विषय के बारे में मेरे मन में उभर उठे। उपसंहार में मैंने इन सभी प्रश्नों के उत्तर यथा संभव देने का प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने पाँच अध्यायो में विभाजित कर के अपने विषय का विवेचन किया है।

अध्याय पहला :-

लघु-शोध-प्रबंध के पहले अध्याय में मन्नूजी के व्यक्तित्व पर संक्षेप में विचार किया है। वह एक सरल-सहज; संवेदनशील; लगनशील; शालीन; विनयी; विवेकी; ईमानदार तथा देशप्रेमी लेखिका है। संपूर्ण व्यक्तित्व से भारतीय नारी का अहसास दिलाती है।

अध्याय दूसरा :-

इस दूसरे अध्याय में मन्नू भंडारी के कृतित्व पर विचार किया है। मन्नूजी का अनेक पहलुओं से भरा हुआ व्यक्तित्व और उसका दर्पण ही उसका कृतित्व है। उन्होंने मानव जीवन के विविध धरातलों से विभिन्न समस्याओं का चयन कर उन्हें अपने उपन्यास साहित्य में प्रस्तुत करने में निर्विवाद रुप से अप्रतिम सफलता मिली हुई है। वह हिंदी की एक बहुमुखी प्रतिभासंपन्न लेखिका है।

अध्याय तीसरा :-

लघु-शोध-प्रबंध के तीसरे अध्याय में "राजनीतिक उपन्यास का स्वरुप एवं विचारधारों का विवेचन किया है।" आधुनिक युग को गद्य का युग कहा जाता है। उपन्यास आधुनिक युग की देन है। उसे आधुनिक युग का महाकाव्य कहा जाता है। इस अध्याय में उपन्यास : शब्द व्युत्पति; भारतीय तथा पाश्चात्य मत; उपन्यास का पारिभाषिक स्वरुप; उपन्यास के मूलतत्व; हिंदी उपन्यास का विकास; समाज और राजनीति का पारस्पारिक संबंध; साहित्य और राजनीति का पारस्पारिक संबंध; साहित्य और राजनीति एक दूसरे के प्रेरक; राजनीतिक उपन्यासों का स्वरुप; हिंदी के राजनीतिक उपन्यासों की प्रवृत्तियाँ; कलापक्ष; शिल्प वैशिष्ट्य; अभिव्यक्ति की शैलियाँ; चरित्र चित्रण; कथोपकथन; वातावरण; उद्देश्य, भाषा शैली; राजनीतिक विचाधाराएँ-लोकतांत्रिक समाजवाद; मार्क्सवादी विचारधारा; राष्ट्रवादी विचारधारा; गांधीवादी चेतना आदि विचारधाराओं का स्वरुप और उनका "महाभोज" में प्रभाव का विवेचन किया है।

अध्याय चौथा :-

लघु-शोध-प्रबंध के चौथे अध्याय का शीर्षक है; "स्वांतत्र्योत्तर हिंदी की राजनीतिक उपन्यास परंपरा" इस में स्वांतत्र्योत्तर कालीन सन् १९५३ से सन् १९८३ तक के उन्नीस उपन्यास- देवेंद्र सत्यार्थी का 'कठपुतली'; वृंदावनलाल वर्मा का 'अमरबेल'; चतुरसेन शास्त्री का 'धर्मपुत्र' और 'उदयास्त'; फणीश्वरनाथ रेणु का 'मैला ऑचल'; विष्णू प्रभाकर का 'निशिकांत'; अनंत गोपाल शेवडे का 'ज्वालामुखी'; भगवतीचरण वर्मा का 'भूले-बिसरे चित्र'; लक्ष्मीनारायण लाल का 'रुपाजीवा'; मन्मथनाथ गुप्त का 'प्रतिक्रिया' और 'सागर-संगम'; श्री यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' का 'एक और मुख्यमंत्री' और 'प्रजाराम'; श्रीलाल शुक्ल का 'रागदरबारी'; श्री राजकृष्ण मिश्र का 'दारुल शफा'; धीरेंद्र अस्थाना का 'समय एक शब्द भर नहीं है'; मुद्राराक्षस का 'शांति-भंग'; श्री हिमांशु जोशी का 'सुराज'; मन्नू भंडारी का 'महाभोज' आदि उपन्यासों का जिक्र किया है। इसके साथ-साथ इसमें आये हुए विविध आयामों का चिंतन किया है।

अध्याय पाँचवा :-

इस अध्याय का शीर्षक है 'महाभोज में चित्रित राजनीति' इस अध्याय में राजनीति किस-किस क्षेत्र से संबंधित है। उसका प्रभाव इतना है कि यह सारे क्षेत्र राजनीति से अलग रह ही नही सकते। 'महाभोज' में राजनीति इतनी हावीं हो गई है कि वर्तमान काल का यह एक यथार्थ राजनीतिक उपन्यास बना हुआ है। इसमें "महाभोज" में चित्रित राजनीति के विविध आयाम-दलित और राजनीति; राजनीति और समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ; जॉच-कमीशन और राजनीति; चुनाव

घोषणा पत्र और राजनीति; दलितों में क्रांति और राजनीति; राजनीति में ईमानदार जनता प्रेमी नेताओं की कथा-व्यथा और राजनीतिक दलों की तोड-फोड; राजनीतिक नेता और चुनावी हथकण्डें; राजनीति में जासूसों का महत्व; राजनीति और न्याय की स्थिति; राजनीति और सरकारी अफसर आदि आयामों का विवेचन किया है।

उपसंहार :-

उपसंहार में लघु-शोध-प्रबंध में उपलब्ध निष्कर्षों को समाकलित किया गया है। साथ ही साथ महाभोज में चित्रित विविध आयामों को तलाशने का प्रयत्न किया है।

परिशिष्ट

परिशिष्ट में विविध चित्रों को समाकलित किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

प्रबंध के अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी गई है।

==========

कृतज्ञता-ज्ञापन :-

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे प्रा. एन्.बी.गुंडेजी के निर्देशन में शोध कार्य करने का अवसर मिला। लघु शोध कार्य के संकल्प की मूर्ति श्रध्देय गुरुवर प्रा.एन्.बी.गुंडेजी के कृपापूर्ण मार्गदर्शन का फल है। आपने प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध के शीर्षक के चुनाव से लेकर अंत तक महत्वपूर्ण सुझाव दिये। प्रस्तुत शोध प्रबंध आप ही के सुयोग्य निर्देशन का परिणाम है। आप के इस अनुग्रह से उऋण होना मेरे लिए असंभव है।

श्रध्देय प्रा.डॉ. वाय्.बी.धुमाळजी का अमूल्य योगदान मेरे इस कार्य में है। आपने सातत्यपूर्ण व्यस्थता के बादजूद भी मुझे निरंतर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मेरी सहायता की। आप की प्रेरणा और आशिर्वाद की मैं निरंतर अभिलाषी रहूंगी.

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. व्ही.के. मोरेजी की मैं हृदय से आभारी हूं। जिन्होंने समय-समय पर बहुमूल्य निर्देश देकर शोध कार्य का मार्ग प्रशस्त किया। जयसिंगपूर कन्या महाविद्यालय, जयसिंगपूर के मेरे प्राचार्य बी.ए.पाटीलजी की सहायता के बिना मैं इस शोध कार्य की कल्पना भी नही कर सकती थी। उन्होंने हर समय मुझे उत्साहित किया। भविष्य में भी आपके ऋण में रहने में मुझे संतोष होगा। इस लघु शोध कार्य में मुझे मेरे पति अँड.श्री.सुरेश पैलवानजी ने हर असंभव को संभव करने की प्रेरणा दे दी। उनकी सहायता के बिना हर कार्य असंभव है। मैं निरंतर उनकी सहायता मुझे मिलने की कामना करती हूं और हृदय से कृतज्ञता प्रकट करती हूं। मेरी सास श्रीमती शांता

पैलवान और मेरे श्रध्देय माता-पिता उनकी दुवासे ही मैं यह कार्य पूरा कर सकी। इस लघु-शोध-कार्य में मेरे सहपाठी प्रा. गोवंडेजी; सौ.देवयानी गुंडे; सौ.नयना धुमाळ; मेरी बहनें सौ.शोभा और सौ. उज्वला आदि ने भी बहुमूल्य सहयोग दिया इसलिए मैं उनकी हृदय से आभारी हूं।

मेरा प्रिय पुत्र चि. शौनक जो मेरे अध्ययन और अध्यापन तथा चिंतन के कारण अक्सर अपने वांछित प्राप्य से वंचित रहा; उसके प्रति कृतज्ञता दिखाना मेरा कर्तव्य है।

बॅरि. बाळासाहेब खर्डेकर शिवाजी विश्वविध्यालय, कोल्हापुर के ग्रंथपाल और कर्मचारी; जयसिंगपुर कन्या महाविद्यालय के ग्रंथपाल सौ. एम.एस.जैन; सांगली कॉलेज सांगली के ग्रंथपाल और कर्मचारी; वेणूताई चव्हाण कॉलेज के ग्रंथपाल आदि की मैं विशेष ऋणी रहुंगी। जिन्होंने पुस्तकों को जुटाने में अत्यंत तत्परता से मेरी सहायता की मैं उन्हें धन्यवाद देती हूं।

अंत में अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य शोध प्रबंध को अतिशीघ्र एवं सुचारु रुप से टंकलिखित रुप देने का काम 'श्री कॉम्प्युटर अकौंटिंग ब्युरो' के प्रबंधक ॲड. श्री. सुधीर शिंत्रेजी ने किया इनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करती हूं। उनके दो सहायक जिन्होंने यह काम कम समय में बडी आत्मियता से किया वे श्री. श्रीकांत गर्जे और श्री. महावीर चौगुले इनके प्रति भी आभार प्रकट करती हूं।

Mrs. J.S. Pailwan
प्रा.सौ.जयश्री सुरेश पैलवान
(शोधछात्रा)

सांगली

दिनांक : ३०.१२.९३

****